

मोहन-कूद परे जमना में
 ग्वाले सबरे नीर बहाँय
 सबरे नीर बहाँय-हाँ-हाँ-सबरे नीर बहाँय

मोहन-कूद-----

ग्वाल-बाल संग-गेंद जो खेली
 सब खों खूब नचाय-हाँ-हाँ-

सब खों खूब नचाय
 जा जमना में गेंद परी तो
 कद्द समझ न आय-हाँ-हाँ-
 कद्द समझ न आय

मोहन-कूद-----

रेंसी जानत होते हम तो
 खेल बंद कर देते-हाँ-हाँ-

खेल बंद कर देते

गेंद हमारी जो चुम जाती
 मन में हम रो लेते-हाँ-हाँ-
 मन में हम रो लेते

मोहन-कूद-----

माता यशोदा नंद जी रोवें
 रोवें सब नर-नारी. हाँ-हाँ.
 रोवें सब नर-नारी.

नाग-नाथ निकरे "श्री बाबा श्री" जब
 दूबि बनी है न्यारी. हाँ-हाँ
 दूबि बनी है न्यारी

मोहन-आन-मिले ग्वालों से-
 सब खों दें-दें ताल नचाँय
 दें-दें ताल नचाँय. हाँ-हाँ-
 दें-दें ताल नचाय-

मोहन आन मिले----